

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : जून 2012

समय : 3 घंटे

प्रश्न पत्र-III

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पांच प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 एवं 6 अनिवार्य हैं। प्रत्येक भाग से कम से कम एक और प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। सब प्रश्नों का अंक समान है।

भाग-I (आयुर्दाय)

1. निम्न जातक का पिण्डायुर्दाय ज्ञात करें :-

जन्म 24.2.1948, समय 14:39, स्थान 12 उ. 18, 76 पू. 42

केतु दशा शेष 3 वर्ष 05 माह 22 दिन

लग्न 078:14, सूर्य 311:33, चंद्र 126:44, मंगल (व) 122:10

बुध(व) 302:01, बृहस्पति 242:01, शुक्र 351:52, शनि(व) 104:53

राहु 024:48, केतु 204:48

2. (क) बालरिष्ट क्या है? कम से कम 5 योग बतायें। निरस्तीकरण के योगों का वर्णन करें।

(ख) आयुर्दाय के निर्धारण में द्वितीय तथा सप्तम भाव की क्या महत्ता है?

3. अल्पायु, मध्यायु तथा दीर्घायु के लिए पाराशर के विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा करें।

4. आयुर्दाय के विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा करें।

5. किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :-

(क) छिद्र ग्रह (ख) मेष तथा वृश्चिक लग्न के मारक ग्रह

(ग) दीन मृत्यु तथा दीन रोग

भाग-II (चिकित्सा ज्योतिष)

6. चिकित्सा के आधार पर समस्त बारह राशियों का भावार्थ बतायें। इनके द्वारा शरीर के कौन से अंग इंगित होते हैं?

7. निम्न के योग बतायें :-

(क) नेत्र योग

(ख) कैंसर रोग

(ग) कुष्ठ रोग

(घ) चर्म रोग

8. किन ज्योतिषीय तथ्यों से पता चलता है कि जातक रोगी प्रवृत्ति का है या नहीं। क्या दशा व गोचर का रोग आरम्भ होने व उसके (रोग) के भविष्य के फल जानने में उपयोग हैं? उदाहरण सहित बताएं।

9. मानव शरीर का स्पष्ट चित्र बनायें तथा विभिन्न अंगों को प्रभावित करने वाले 27 नक्षत्रों को दर्शायें।

10. चिकित्सीय ज्योतिष शास्त्र में निम्न की महत्ता पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

(क) 22 वां द्रवकन तथा 64 वां नवांश

(ख) कालपुरुष का सिद्धान्त

(ग) मृत्यु भाग में ग्रहों की भूमिका

(घ) चंद्रमा तथा मासिक धर्म की परेशानी